ममता

भोर की धूप के टुकड़े सा
वो आँगन में उतरा था।

फिर ज्यों -ज्यों वर्ष रुपी सूरज आकाश में चलता रहा
वो टुकड़ा बढ़ता रहा बढ़ता रहा।

और एक दिन इतना बड़ा हो गया
कि अब उसके लिए आँगन छोटा हो गया।

और वो आँगन की दहलीज को पार कर
चला गया अन्यत्र किसी सुनहरी सुबह की तलाश में।

फिर अचानक कहीं उसे मिला एक फूल
मस्त मुस्कराहटें बिखेरता हुआ।

उसकी मस्ती में वो कुछ ऐसा खोया
कि कांटो की चुभन का अहसास भी ना हुआ।

ज्यों ही उसके हाथ रक्ताभ हुए वो हैरान हुआ
और फिर लौट पड़ा उसी आंगन की तरफ।

जहां वो पहले पहल उतरा था चला था
और जहां उसे ममता ने सींच कर बड़ा किया था।

वहां मिले उसे लाचार कुछ
खामोश सी चुप चाप खोयी खोयी ममता भरी छाया।

जिसने अपने आगोश में उसे यूं छिपा लिया
जैसे छिपा लेती है सीप मोती को अपने अन्तः स्थल में।।

अन्जु चौधरी, "शोध सहायक"